आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2625 • उदयपुर, गुरुवार 03 मार्च, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

औरंगाबाद (बिहार) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 20 फरवरी 2022 को आर्यन महाजन नाट्य कला मंच औरंगाबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् उदयकुमार जी अध्यक्ष, नगरपरिषद औरगांबाद, बिहार रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 505, कृत्रिम अंग माप 90, कैलिपर्स माप 42, की सेवा हुई तथा 75 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् उदयकुमार जी (अध्यक्ष, नगरपरिषद औरंगाबाद), अध्यक्षता डॉ. महावीर प्रसाद जी जैन (रोटरी क्लब), विशिष्ट अतिथि श्री डॉ. चन्द्रशेखर जी (रोटरी क्लब), श्री विनोद कुमार जी (अध्यक्ष, विकलांग संघ), श्री गिरजा राम

जी (उपाध्यक्ष, विकलांग संघ), डॉ. अंजली जी (बुनयाद केन्द्र, बारुद ब्लॉक) रहे।

डॉ. अमीत कुमार जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. पंकज कुमार जी (पी.एन.डो), श्री नरेश जी वैष्णव (टेक्नीशियन), शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी, श्री बहादुर सिंह जी मीणा, श्री सत्यनारायण जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

गजरोला, जिला अमरोहा (उत्तरप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 20 फरवरी 2022 को जे.बी.एफ मेडिकल सेंटर राम धर्म कांटा के पास, भरतीया ग्राम में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता जे.बी.एफ मेडिकल सेंटर, गजरोला रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 221, कृत्रिम अंग माप 69, कैलिपर्स माप 39, की सेवा हुई तथा 19 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री सुनिल जी दीक्षित (निदेश जन सम्पर्क अधिकारी), अध्यक्षता डॉ. सुजिन्द्र जी फोगाट (चिकित्सक), विशिष्ट अतिथि श्री डॉ. नितिन जी (चिकित्सक), श्री अजय कुमार जी (सेवा प्रेरक), श्रीमती आरती जी

(समाज सेविका) रहे। नेहा जी (पी.एन.डो), श्री किशन जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री बजरंग जी, श्री गोपाल जी (सहायक) ने भी सेवायें दी।

श्री गणेशाय नमः

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

दिव्यांग एवं निर्धन
सामूहिक विवाह समारोह

YouTube LIVE
दिनांक : 6 मार्च 2022
स्थान : सेवा महातीर्थ बड़ी, उदयपुर
LIVE

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन
एवं कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक व स्थान

06 मार्च 2022 :ओली सीमेंट ऐजेन्सीज एण्ड बिल्डिंग मटेरियल मैन चौराया, कुटरा खटीया, उधमसिंहनगर, उत्तराखण्ड

06 मार्च 2022 : पारस मंगल कार्यालय, पारस नगर, शेदूर्णी ता. जामनेर , जलगांव महाराष्ट्र

06 मार्च 2022 : राम विष्णु सरस्वती शिशु मंदिर, चांदपुर चौराहा, नहटौर, बिजनौर, उ.प्र.

06 मार्च 2022 : गीता आश्रम, हनुमान चौराहा, जैसलमेर, राजस्थान

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

पारसमणि या भक्तिमणि?

एक दिन एक गरीब ब्रह्मण ने एक साधु से विनती की कि मेरी बेटी का विवाह है। आप तो दयालु है, कुछ कृपा करें। साधु बोला कि मैं क्या करूं, मेरे पास कुछ नहीं है। मैं अकिंचन हूं। किसी ने कुछ मांगता नहीं। वह ब्राह्मण कई लोगों के पास गया, लेकिन कहीं से उसे कुछ नहीं मिला। आठ दिन बाद ब्राह्मण दोबारा साधु के पास गया और बोला कि बाबा कुछ चारा नहीं, आधार नहीं, आप ही कुछ कृपा करें। साधु से रहा नहीं गया, तो उसने कहा कि तुम मेरे साथ चलो। वह उसे नदी के तट पर ले गया। वहां एक वृक्ष था, जो जड़ के पास से खोखला था। साधु ने कहा कि जरा देखो तो पेड़ की खोल में कुछ पड़ा है। ब्राह्मण ने उसमें हाथ डालकर देखा तो बोला कि हां, बाबा कुछ है। साधु ने कहा कि उसे तुम ले लो। ब्राह्मण ने उसमें पड़े एक पत्थर को उठाया और पूछा कि यह क्या है ? साधु बोले कि यह पारसमणि है। ले जा इससे तेरा काम बन जाएगा। ब्राह्मण अचरच में पड़ गया। वह सोचने लगा कि आखिर इस साधु के पास ऐसी कौन सी मूल्यवान चीज है कि उसने पारसमणि को यूं ही पेड़ की खोखल में रखा हुआ है। इसके पास निश्चय ही ज्यादा कोई कीमती वस्तु होगी। अपने हाथ में पारसमणि लिए हुए ब्रह्मण ने साधु से पूछा कि आप राज खोलिए न। आपने तो पारसमणि को ऐसे ही डाल रखा था। तो क्या आपके पास इससे भी कोई कीमती मणि है ? साधु ने कहा कि हां इससे भी कीमती भक्ति और प्रेम मणि मेरे पास है। यह पारसमणि उसके सामने व्यर्थ है। यह सुन ब्राह्मण बोला कि बाबा, अब तो मैं भी यह लेने वाला नहीं हूं। देना ही है तो भक्ति और प्रेम मणि का प्रसाद दीजिए। पारसमणि में क्या, जितना दिया, उतना गया। लेकिन भक्तिमणि में जितना दिया, उससे ज्यादा बढ़ता जाता है। प्रतिक्षण बढ़ता है।

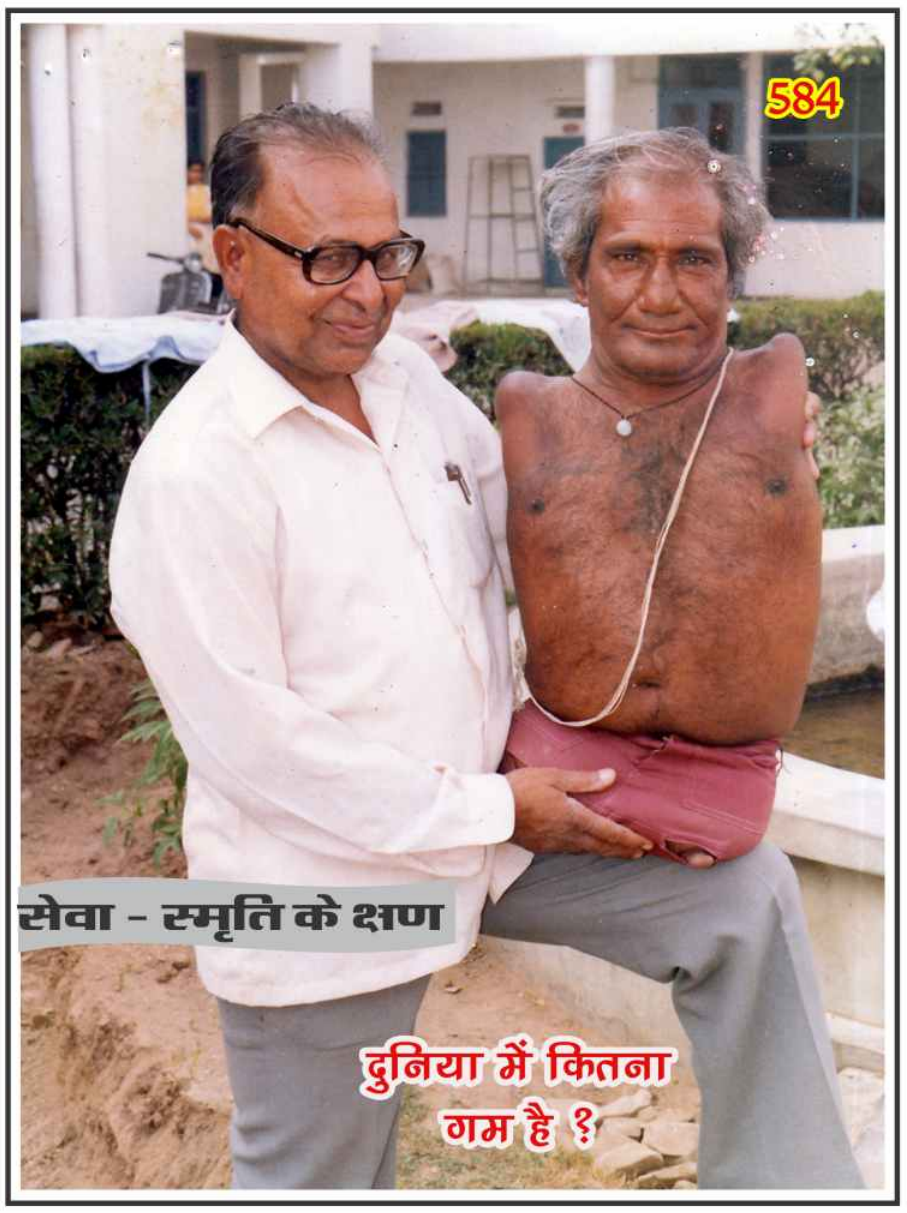

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

तिरंगा झुक नहीं पाये.....।
..... जिन्हें आजादी प्यारी है।।

चन्द्रशेखर आजाद को क्यों लगा था मेरा भारत आजाद होगा ? और जब 201 नालायकों, दुश्टों ने सैनिकों अल्बर्ट पार्क को घेर लिया। चन्द्रशेखर आजाद जी ने सोचा मैंने कहा मेरी लाश को इनके हाथ नहीं लगने दूंगा। धाँय–धाँय करके पाँच अंग्रेजों को मार डाला और छठी गोली उन क्रांति के सरदार ने उन क्रांति के दूत ने हमारे को आजाद कराने वाले चन्द्रशेखर आजाद ने अपनी कनपट्टी पर रख दी। क्या क्षण रहे होंगे ? वो एक–दो क्षण कैसे रहे होंगे ? जब भगतसिंह जी जिनको प्रणाम करते थे। जब चन्द्रशेखर ने एक बार कहा था। हम आपको अपने दल में कैसे शामिल करें ? यदि अंग्रेजों ने आपको पकड़ लिया। आपको बर्फ की सिल्लियों पर लेटायेंगे, आपको भूखा रखेंगे–प्यासा रखेंगे। आपकी कौड़े से पिटाई करेंगे। उस समय हमारे नाम पते बता सकते हो, उस समय जलती हुई मोमबत्ती पर भगतसिंह ने हाथ रख दिया था, खून निकलता रहा। मांस के लौथड़े नीचे पड़ते रहे। ऐसे भगत कहा चले गये आप ? ऐसे चन्द्रशेखर आजाद, लेकिन उनको हम पहचान नहीं पाये। अन्यथा आज ये दिव्यांग, दिव्यांग नहीं होते। ये दिव्यांग भी पूर्ण पैरों पर चल रहे होते। इनको डेढ़ साल की वेटिंग नहीं दी जाती। कहीं ना कहीं हमारे से भूल हो गयी। कहीं ना कहीं हमारे से चूक हो गयी।

सम्पादकीय

सफलता सभी को प्रिय होती है। हरेक व्यक्ति सफल होना चाहता है। असफलता का वरण कोई नहीं करना चाहता, और करे भी क्यों? मानव जीवन मिला ही इसलिये है कि हम सफलता के सोपान चढ़ते चले जायें। पर सफलता दो प्रकार से मिलती है यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

किसी को सफलता मिलती है किस्मत से तो किसी को सफलता मिलती है लगन से। सफलता तो दोनों ही हैं किन्तु दोनों में मौलिक भेद है। यह भेद केवल प्रकार का नहीं वरन् श्रेष्ठता का भी है। किस्मत से प्राप्त सफलता में व्यक्ति का कोई योगदान नहीं होता है। जबकि लगन से प्राप्त सफलता का सारा ही किया–करा व्यक्ति का स्वयं का होता है। किस्मत की सफलता भले ही सफलता है पर उसका स्वाद फीका ही होता है जबकि लगन, परिश्रम और पुरुषार्थ के प्राप्त सफलता का स्वाद अविस्मरणीय होता है।

कुछ काव्यमय

सफलता मानव जीवन का पड़ाव है।
सफलता पाने के दो बर्ताव है। किस्मत और लगन
दोनों से आती है सफलता।
पर किस्मत से पाई तो
क्या पाई ?
पुरुषार्थ से ही मिले तो
मन फूलता–फलता।

अपनों से अपनी बात

आत्मबल सबसे बड़ा सम्बल

कोई भी कार्य तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक उसे पूरे मनोयोग से न किया जाए। कार्य को सफलता की ओर जो ताकत गति देती है, वह है हमारा उत्साह यानी आत्मबल। योद्धा अस्त्र–शस्त्र चलाने में चाहे कितना ही निपुण हो .....लेकिन उसमें आत्मबल नहीं है तो वह जीती हुई बाजी भी हार सकता है। व्यवस्था, सृजन अथवा योग्यता वही सफल अथवा कारगर है..... .जिसका पृष्ठ बल उत्साह है।

महाभारत का युद्ध होने वाला था। दोनों सेनाएँ अपने–अपने शिविरों में तैयारी कर रही थीं। धर्मराज युधिष्ठिर को अनमना सा बैठे देख अनुज अर्जुन उनसे कारण पूछ बैठे.....युधिष्ठिर बोले..... कौरव सेना संख्या बल में हमसे अधिक है। सक्षम योद्धाओं की पंक्ति भी उनकी हमसे लम्बी है.....ऐसी स्थिति में पांडवों की विजय संदिग्ध है। तब आत्मविश्वास से भरपूर अर्जुन ने कहा कि आपका कथन कुछ सीमा तक तो सही हो सकता

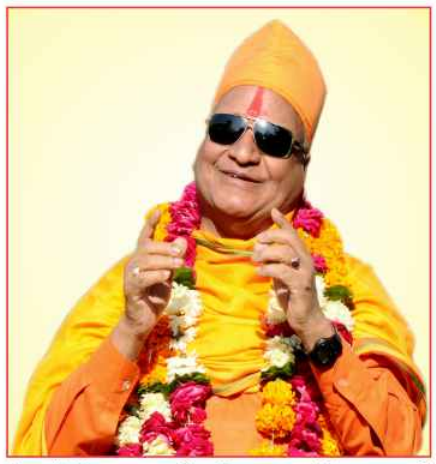

है, लेकिन हमारी विजय संदिग्ध नहीं सुनिश्चित है, क्योंकि हमारे पास श्री.ष्ण हैं, धर्म है और सत्य है। अर्जुन का यही आत्मबल सफल हुआ और संख्या में कम होने के बावजूद पाण्डवों ने विजय पताका फहराईं परिस्थितियाँ तो बनती बिगड़ती रहती हैं....हमें हर हाल में अपना उत्साह बनाए रखना चाहिए। हमें मनुष्य शरीर मिल गया, इसलिए इसकी दुर्लभता का ज्ञान नहीं है।.....अपना समय निरर्थक नहीं जाने दें। भगवान से प्रार्थना करें कि हे नाथ! आपको भूलूँ नहीं।

परोपकार का मन में सदा भाव रखें और सेवा वही करें जो सुगमता और सच्चे मन से हो सके। भगवान भी आपकी सामर्थ्यानुसार की गई सेवा मात्र से ही प्रसन्न हो जाएँगे..... आपका मन भी प्रफुल्लित रहेगा। प्रफुल्लित मन उत्साह का संचार करेगा। मानव शरीर लेने के लिए नहीं, दूसरों को कुछ देने के लिए है। हम पर सभी प्राणियों का ऋण है, क्योंकि सभी ने किसी न किसी रूप में हमारा उपकार किया है।

दुर्लभं त्रयमेवैतदेवानु ग्रहहेतुकम्।
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुष संश्रयः।

आत्म विश्वास अथवा आत्म बल की अभिव्यक्ति होने पर शोक, मोह, शारीरिक अक्षमता, मृत्यु आदि के भय नष्ट हो जाते हैं। आत्म विश्वास को डगमगाने वाली कोई चीज है तो वह ग्लानि। इसके भीतर प्रवेश होते ही आत्म भाव अदृश्य होने लगता है और शरीर कार्य के प्रति उत्साहहीन हो जाता है। हमारे ऋषियों, महर्षियों और योगियों ने अपने ध्यान व योग के माध्यम से इसी ग्लानि पर विजय प्राप्त की और वे शोक, मोह, मृत्यु से अभय होकर दृढ़ सर्वज्ञ और चिन्मय बने।

– कैलाश 'मानव'

अनोखा कर्मचारी

बात 1947 की है। लेस्टर वण्डरमेन नाम का एक व्यक्ति मेक्सवेल सेकिम एण्ड कम्पनी में काम करता था। यह एक विज्ञापन एजेन्सी थी। एक दिन एजेन्सी के मालिक को लगा कि कम्पनी के मुनाफे का अधिकांश हिस्सा तो कर्मचारियों में ही चला जाता है, अगर वह कर्मचारियों की छंटनी कर देगा तो निश्चित ही उसे अधिक

फायदा होगा। अपनी योजनानुसार उसने कई कर्मचारियों को निकाल दिया, लेस्टर वण्डरमेन भी उनमें से एक थे। नौकरी से निकाले जाने के बाद भी वह एजेन्सी में आकर काम करते रहे। दूसरे कर्मचारी अक्सर उनसे कहते – जब तुम्हें यहाँ से निकाल दिया गया है तो फिर, यहाँ काम क्यों कर रहे हो?

"मैं यहाँ बिना तनख्वाह के काम कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि मैं इस विज्ञापन एजेन्सी के मालिक से बहुत कुछ सीख सकता हूँ।" वण्डरमेन ने उत्तर दिया। एजेन्सी के मालिक वण्डरमेन को देखकर भी नजरअंदाज करते रहे। उन्होंने एक महीने तक वण्डरमेन को अनदेखा किया एवं तनख्वाह भी नहीं दी, लेकिन वण्डरमेन ने फिर भी हार नहीं मानी और वे काम करते रहे। एक दिन हार कर कम्पनी के मालिक वण्डरमेन के पास गए और बोले –मैंने पहले कभी ऐसा व्यक्ति नहीं देखा, जिसे काम तनख्वाह से ज्यादा प्रिय हो। वण्डरमेन ने वहीं पर काम करके विज्ञापन की अनेक बारीकियों को सीखा। जब उन्हें वहाँ काम करते–करते बहुत समय बीत गया तो, उन्होंने अपनी समझ और अपने तरीके से विज्ञापन बनाने शुरू कर दिए। इसके पश्चात् वह विज्ञापन की दुनिया में इस कदर छा गए कि उन्हें इस क्षेत्र में सदी का सबसे सफल व्यक्ति माना गया। आज भी लोग उन्हें "Father of Direct Marketing" के रूप में जानते हैं। अतः हम सभी को शुरूआती असफलता के बावजूद मेहनत, लगन, आस्था और विवेक के काम करना होगा, क्योंकि सफलता अवश्य मिलेगी।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

बीच बाजार दुकान थी, भिखारियों का आना जाना लगा रहता था। सब उन्हें दुत्कार कर भगा देते थे। एक दिन पड़ोस की दुकान पर एक फटेहाल व्यक्ति, गोद में बच्चा लिये खाने को कुछ देने के लिये कह रहा था। कैलाश को यह व्यक्ति दूर से ही भिखारी जैसा नहीं लगा। जब वह उसकी दुकान पर मांगने आया तो उसे बिठाया और सामने स्थित उदयपुर ढाबे से कुछ ना ता मंगा उसे खिलाया। व्यक्ति वाकई भिखारी नहीं था वरन् हालात का मारा था। उसके झोले में 20–25 सर्टिफिकेट थे। एक सर्टिफिकेट राष्ट्रपति द्वारा दिया गया था जिसमें उसके शब्दभेदी बाण चलाने में निपुणता की प्रशंसा थी। एक सर्टिफिकेट उसकी अद्भुत स्मृति की प्रशंसा में था।

कैलाश इस व्यक्ति की विलक्षण प्रतिभा और उसकी मांग खाकर जीने की हालत देख कर आश्चर्यचकित रह गया। उसे इसका कारण पूछा तो बताया कि पत्नी बच्चे को जन्म दे चल बसी, रिश्तेदारों ने जमीन जायदाद हथिया ली तो निराश होकर गांव छोड़ दिया और अब बच्चे को ले दर दर भटक रहा है। वह म.प्र. के रीवां क्षेत्र से आया बताता था। घूमते घामते भीलवाड़ा पहुँच गया था। कैलाश ने उसे नहलवा धुलवा कर भोजन कराया। वह थोड़ा संयत हो गया तब उसने कहा कि वो अपनी विद्या बताना चाहता है। उसके झोले में एक छोटा सा धनुष बाण था। दुकान के अंदर जाकर उसने एक धागे पर पत्थर लटका कर कैलाश के हाथ में दिया, स्वयं की आंखों पर पट्टी बांध ली और कैलाश को कहीं भी खड़े होकर धागे को हिलाने व एक से दस तक गिनती बोलने को कहा। धागे को हिलाते हुए कैलाश ने ज्यूं ही दस बोला उसने तीर छोड़ा और धागे को बीच से काट दिया जिससे पत्थर नीचे जा पड़ा।

कैलाश उसकी दक्षता पर हतप्रभ था। इसके बाद उसने एक ब्लेक बोर्ड मंगवाया और कहा इस पर जितनी हो संख्या लिखनी है, लिख दो। उसकी आंखों पर पट्टी बंधी हुई ही थी।

जो भी संख्या बोर्ड पर लिखी जा रही थी उसे बोलना जरूरी था, जैसे 10 करोड़ 50 लाख 569 लिखा तो उसे बोलना था। इस तरह दस बारह संख्याएं एक के नीचे एक लिख दी उसने कहा कि अब इसके नीचे एक लकीर खींच दो। लाईन खींच दी तो उसने तमाम संख्याओं की जोड़ बताना शुरू कर दिया। वो बोलता गया, कैलाश लिखता गया। अब उसने कहा कि आप खुद जोड़ कर देख लो, कैलाश ने जोड़ की तो व्यक्ति द्वारा लिखाई गई संख्या एकदम सही थी। अरबों–खरबों की संख्या थी मगर एक अंक तक की गलती नहीं थी। कैलाश अत्यन्त प्रभावित हो गया कि यह आदमी है या जीता जागता केलकुलेटर।

अंश - 022

सिंघाड़ा बहुत लाभदायक है

सिंघाड़े में बी, सी, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, आयरन, कैल्शियम, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस आदि पोषक तत्व होते हैं। इसे कच्चा या उबाल कर खान से शरीर को सभी जरूरी तत्व मिलने के साथ इम्यूनिटी बढ़ती है। ऐसे में बीमारियों से बचाव रहता है। तो आइए जानते हैं इसके सेवन से मिलने वाले अन्य बेहतरीन फायदों के बारे में –

- नियमित सेवन रूप से इसके सेवन से सांस से जुड़ी समस्याओं से राहत मिलती है। ऐसे में अस्थमा के रोगियों को इसे अपनी डाइट में जरूर शामिल करना चाहिए।
- बवासीर से परेशान लोगों को अपनी डाइट में शामिल करना चाहिए। इसके सेवन से इस रोग से आराम मिलता है।
- इसमें मौजूद आयोडीन गले के लिए फायदेमंद होता है। इसके सेवन से थाइराईड ग्रंथि सही तरीके से काम करती है। साथ ही गले से जुड़ी अन्य समस्याओं से राहत मिलती है।
- इसमें आयरन अधिक मात्रा में होता है। ऐसे में इसका सेवन करने से शरीर में खून की कमी पूरी होने में मदद मिलती है।
- शरीर के किसी हिस्से में दर्द व सूजन की परेशानी होने पर सिंघाड़े को पीसकर पेस्ट लगाने से आराम मिलता है।
- इसमें कैल्शियम, आयरन, एंटी–ऑक्सीडेंट्स आदि गुण होने से शरीर में कैल्शियम की कमी पूरी होती है। मांसपेशियों, हड्डियों व दांतों को मजबूती मिलती है।
- सिंघाड़े ऊर्जा का मुख्य स्त्रोत है। इसके सेवन से थकान, कमजोरी दूर होती हो शरीर में ऊर्जा का संचार होता है। ऐसे में इसे खासतौर पर व्रत के दौरान खाया जाता है।

ज्यादा सेवन करने से बचें

- रोजाना 10–15 ग्राम सिंघाड़ो का सेवन करें।
- जिन लोगों को कब्ज की शिकायत रहती है। उन्हें इसके सेवन से बचना चाहिए। नहीं तो परेशानी बढ़ सकती हैं।
- अधिक मात्रा में सिंघाड़ो का सेवन करने से पाचन तंत्र खराब हो सकता है। इससे पेट में भारीपन व गैस हो सकती है।
- इसके सेवन के तुरंत बाद पानी पीने से बचें। नहीं तो पेट दर्द की परेशानी हो सकती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

राम अवध जी कलकता वाले, उनके छोटे भाई रामसूरत जी, जयसवाल जी, भले आदमी मंगल भवन कृपा वाले, प्रभु की कृपा भयो सब काजू, जनम हमार सफल भयो आजु वाले कुछ शुभ नामों का स्मरण, जिन्होंने हॉस्पिटल बनाया है।

जसंवत भाई शाह मुम्बई वाले, जिन्होंने एक हॉस्पिटल बनावाया एवं उन्होंने अपनी बेटी को बताया तो उनकी बेटी और उनके ससुर जी ने एक हॉस्पिटल और बनाया। फिर उन्होंने अपने मित्र को बताया तो उन्होंने एक हॉस्पिटल बनाया। पांच हॉस्पिटल बने जसवंत भाई शाह की प्रेरणा से–

मैं नहीं मेरा नहीं,
ये तन किसी का है दिया,
जो भी अपने पास है,
वह धन किसी का है दिया।

सच्चाई यही है लाला, सत्य का अनुसंधान ये है कि परमात्मा ने हमें निमित्त बनाया, ये अनित्य शरीर दिया है, जिसके रोम–रोम में संवेदना है, ये संवेदना क्षणभंगुर है। हर संवेदना महसूस करवाती है– बुलबला पानी का, बुलबुला फूट गया, कोई एक क्षण में फूटा, कोई दो क्षण में फूटा, कोई दुख स्थायी नहीं, कोई सुख स्थाई नहीं। महात्मा बुद्व ने कहा– अरे! इनकी कमर क्यों झुक गयी? लकड़ी हाथ में क्यों पकड़ ली? क्या हो गया इनको? महाराज ये वृद्ध हो गये।

ये क्षीण हो गये, ये सीनियर सिटीजन हो गये हैं। क्या मुझे भी ऐसा होना पड़ेगा? अरे! ये क्या राम नाम सत्य कहते जाते हैं। ये चार लोगों ने अर्थी ले रखी, कहाँ जा रहे हैं? महाराज इनका शरीर शांत हो गया, इनकी देह चली गयी है। सारी संवेदना समाप्त हो गयी, अब कोई संवेदना इनके साढ़े तीन हाथ की काया में नहीं चलती है। कोई पानी का बुल बुला फूलता नहीं। फूलेगा नहीं तो फूटेगा, कहाँ से पानी का बुलबुला? परदेशी रवाना हो गया।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 375 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

श्री गणेशाय नमः

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

दिव्यांग एवं निर्धन कन्याओं के बनें धर्म माता-पिता

पूर्ण कन्यादान (प्रति कन्या)
₹ 51,000

आंशिक कन्यादान (प्रति कन्या)
₹ 21,000

पाणिग्रहण संस्कार (प्रति जोड़ा)
₹ 10,000

मेहंदी रस्म (प्रति जोड़ा)
₹ 2,100

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe paytm
narayanseva@sbi

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय: 483, 'सेवाधाम' सेवा नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) 313002, भारत

+91 294 662 2222, 266 6666 | +91 7023509999

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023